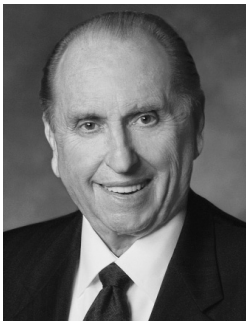

अध्यक्ष थॉमस एस. मॉनसन द्वारा

प्रेम — सुसमाचार का सार

हम परमेश्वर से वास्तव में प्रेम नहीं रख सकते हैं यदि हम इस नश्वर जीवन में हमारे साथ जी रहे लोगों से प्रेम न रखें ।

मेरे प्यारे भाइयों और बहनों, जब हमारा उद्धारकर्ता मनुष्य के बीच सेवकाई कर रहा था, उससे एक वकील ने पूछा था, ''हे गुरू, व्यवस्था में कौन सी आज्ञा बड़ी है ?''

मत्ती यीशु के जवाब को लिखता है:

''तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख ।

''बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है ।

''और उसी के समान यह दूसरी भी है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख ।''[1]

मरकुस उद्धारकर्ता के कथन का निष्कर्ष इस प्रकार लिखता है : ''इस से बड़ी और कोई आज्ञा नहीं है ।''[2]

हम परमेश्वर से वास्तव में प्रेम नहीं रख सकते हैं यदि हम इस जीवन में हमारे साथ जी रहे लोगों से प्रेम न रखें । उसी तरह, हम अपने साथियों से पूरी तरह प्रेम नहीं रख सकते यदि हम सबके पिता परमेश्वर से प्रेम नहीं रखते हैं । प्रेरित यूहन्ना हम से कहता है, ''और उस से हमें यह आज्ञा मिली है, कि जो कोई अपने परमेश्वर से प्रेम रखता है, वह अपने भाई से भी प्रेम रखे ।''[3] हम सब हमारे स्वर्गीय पिता के आत्मिक बच्चे हैं और, इस प्रकार, हम भाई और बहन हैं । इस सच्चाई को मन में रखने से हमारे लिए परमेश्वर के सभी बच्चों से प्रेम करना सरल हो जाता है ।

असल में, प्रेम सुसमाचार और यीशु मसीह हमारे उदाहरण का मुख्य हिस्सा है । उसका जीवन प्रेम की विरासत है । रोगी को उसने चंगा किया, कुचले हुओं को उसने उठाया, पापियों को उसने बचाया । अंत में, क्रोधित भीड़ ने उसके प्राण ले लिए । और फिर भी गोलगूता की पहाड़ी से ये शब्द गूंजे थे : ''हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं''[4] — नश्वरता में दया और प्रेम का सर्वोच्च उदाहरण ।

बहुत से विशेषताएं हैं जो प्रेम की अभिव्यक्तियां हैं, जैसे दया, धैर्य, निस्वार्थीपन, समझ, और क्षमा । हमारे सभी संबंधों में, ये और अन्य इस प्रकार की विशेषताएं हमारे हृदयों में प्रेम को दूसरों पर प्रकट करने में मदद करेंगे ।

आमतौर पर हमारा प्रेम एक दूसरे के साथ प्रतिदिन के संबंधों में दिखाया जाता है । सबसे मुख्य यह दूसरों की जरूरत को पहचानने की योग्यता और फिर प्रतिक्रिया करना है । मैंने इस लघु कविता में दर्शाये भावों को हमेशा संजोकर रखा है :

मैं रात को रोया
नजर की उस कमजोरी के लिए
जिसने किसी की जरूरत के प्रति मुझे अंधा
बना दिया;
मैंने अभी तक कभी भी
रति भर खेद अनुभव नहीं किया
क्योंकि मैं थोड़ा अधिक दयावान रहा हूं ।[5]

हाल ही मैं मुझे एक हृदय को छू लेने वाली प्रेमपूर्ण दया के उदाहरण से अवगत कराया गया था—ऐसा जिसके अप्रत्याशित परिणाम हुए थे । 1933 का साल था, जब महान मंदी के कारण, रोजगार के मौके बहुत कम थे । जगह सयुंक्त राज्य का पूर्वी भाग थी । एरलीन बाइसैकर हाई स्कूल से हाल ही में पास हुई थी । रोजगार की लंबी खोज करने के बाद, उसे कपड़े की मिल में दर्जिन का काम मिल गया था । कामगारों को केवल उन कपड़ों की सिलाई के लिए भुगतान किया जाता था जो वे प्रतिदिन सही ढंग से सिलते थे । जितने अधिक कपड़े वे सिलते थे, उतना अधिक भुगतान उन्हें किया जाता था ।

एक दिन मिल शुरू होने के तुरंत बाद, एरलीन को इस तरह कपड़ा सिलना पड़ा कि जिसने उसे उलझा और परेशान कर दिया । वह अपनी मशीन पर उस कपड़े की सिलाई को बार-बार उधेड़ती रही जिस पर वह काम कर रही थी । लगता था कोई उसकी मदद करने के लिए वहां नहीं था, क्योंकि बाकी सभी दर्जिन अधिक से अधिक कपड़े सिलने में व्यस्त थी । एरलीन लाचार और निराश दी । वह चुपचाप रोने लगी ।

एरलीन के सामने बरनीस रॉक बैठी थी । वह बड़ी और अधिक अनुभवी दर्जिन थी । एरलीन की परेशानी को देखकर, बरनीस ने अपना काम छोड़ा और एरलीन की तरफ गई, और प्यार से उसे निर्देश देने और उसकी मदद करने लगी । वह तब तक वहां रही जब तक एरलीन को आत्मविश्वास नहीं आया और उसने कपड़े को पूरा नहीं सिल लिया । बरनीस फिर अपनी मशीन पर वापस चली गई, वह उतने अधिक कपड़े नहीं सिल पाई जितना वह सिल सकती थी यदि वह मदद के लिए नहीं जाती ।

इस प्रेमपूर्ण दया के काम के साथ, बरनीस और एरलीन जीवन-भर की मित्र बन गई । दोनों की अंततः शादी हुई और बच्चे हुए । 1950 में एक दिन, बरनीस. जोकि गिरजे की

सदस्य थी, उसने एरलीन और उसके परिवार को मॉरमन की पुस्तक की एक प्रति दी । 1960 में, एरलीन और उसके पति और बच्चे बपतिस्मा लेकर इस गिरजे के सदस्य बन गये । बाद में वे परमेश्वर के पवित्र मंदिर में मुहरबंद हुए थे ।

उस दया के परिमामस्वरूप, जो बरनीस ने अपने को असुविधा में डालकर दिखायी और ऐसे व्यक्ति की मदद की जिसे वह नहीं जानती थी लेकिन जोकि परेशान थी और जिसे मदद की जरूरत थी, अनगिनत लोग, जीवित और मृत, अब सुसमाचार की बचाने वाली विधियों का आनंद उठा रहे हैं ।

हर दिन हमारे जीवन में हमें ऐसे मौके दिये जाते जब हम अपने आस-पास के लोगों के प्रति प्रेम और दया का प्रदर्शन कर सकते हैं । अध्यक्ष स्पेसर डब्ल्यू. किंबल ने कहा था : ''हमें हमेशा याद रखना चाहिए जो लोग हमें पार्किंग स्थान, कार्यालयों, लिफ्ट, या कहीं भी मिलते हैं उन लोगों का एक हिस्सा हैं जो परमेश्वर ने हमें प्रेम रखने और सेवा करने के लिए दिये हैं । यदि हम अपने इन आस-पास के लोगों की भाई-बहन के रूप में चिंता नहीं कर सकते तो मानवजाति में भाईचारे की बात करने से हमारा कुछ लाभ नहीं होगा ।''[6]

अक्सर प्रेम का प्रदर्शन करने के हमारे मौके अचानक आते हैं । ऐसा एक उदाहरण अक्टूबर 1981 में समाचार पत्र के एक लेख में प्रकट हुआ था । उस समाचार के लेख में बताए प्रेम और दया की बात से मैं बहुत प्रभावित हुआ कि मैंने उस लेख की करतन अपनी फाईल में 30 साल तक संभाल कर रखी ।

उस लेख में एंनकारेज, अलास्का से सीएटल, वाशिंगटन तक की एक नॉन-स्टॉप उड़ान का जिक्र था —- जिसमें 150 यात्री थे— जो कि एक बुरी तरह से घायल एक बच्चे को लेने के लिए सूदूर अलास्का के एक शहर की ओर मोड़ दी गई थी । दो साल के लड़के की बांह की खून की नली कट गई थी जब वह अपने घर के पास खेलते हुए कांच के टुकड़े पर गिर गया था । यह शहर एंनकारेज से 725 किमी दूर था और अवश्य ही उड़ान के मार्ग पर नहीं था । फिर भी, लकड़े की मदद कर रहे डॉक्टर ने जल्दीबाजी में मदद के लिए अनुरोध भेजा था, और इसलिए इस उड़ान को उस बच्चे को सीएटल ले जाने के लिए उस शहर की ओर मोड़ दिया गया था ताकि बच्चे का अस्पताल में इलाज किया जा सके ।

जब उड़ान उस शहर में उतरी, डॉक्टरों ने पाईलेट को बताया कि बच्चे का इतनी बुरी तरह से खून बह रहा है कि वह शायद सीएटल पहुंचने तक न बच पाये । इसलिए निर्णय लिया गया कि उड़ान को दूसरी दिशा में 320 किमी आगे अलास्का के एक अन्य शहर जानीऊ ले जाया जाए जहां कि निकटत्तम बड़ा अस्पताल है ।

बच्चे को जानीऊ पहुंचाने के बाद उड़ान सीएटल की ओर उड़ चली, अपने समय से घंटों लेट । एक भी यात्री ने शिकायत नहीं की, यद्यपि उनमें से बहुतों के काम का नुकसान हुआ और आगे जाने वाली उड़ान छूट चुकी थी । असल में, जैसे जैसे समय बीतता जा रहा था, यात्रियों ने लड़के और उसके परिवार की मदद के लिए काफी धन जुटा लिया था ।

जब उड़ान सीएटल में उतरी तो यात्री से खुशी से चिल्ला उठे जब पाइलेट ने घोषणा की कि उसे सूचना मिली थी कि वह लड़का बिलकुल ठीक हो जाएगा ।[7]

मेरे मन में धर्मशास्त्र के ये शब्द आये : ''उदारता मसीह का सच्चा प्रेम है, ... और अंतिम दिन जिसमें भी यह पाया जाएगा, उसके साथ भला होगा ।''[8]

भाइयों और बहनों, अपने प्रेम का प्रदर्शन करने के हमारे महानत्तम मौके हमारे स्वयं के घरों की चार-दिवारी के बीच होंगे । प्रेम हमारे पारिवारिक जीवन का एक अति-महत्वपूर्ण हिस्सा होना चाहिए, मगर फिर भी ऐसा होता नहीं है । यहां अत्याधिक बेचैनी, अत्याधिक बहस, अत्याधिक लड़ाई, अत्याधिक आंसू होते हैं । दुखी अध्यक्ष गोर्डन बी. हिंकली ने पूछा था : ''ऐसा क्यों होता है कि जिनसे हमें प्रेम रखना चाहिए वे बार-बार हमारे कठोर शब्दों के शिकार बनते हैं ? ऐसा क्यों होता है कि जब हम किसी से बात करते हैं तो लगता है मानो हाथ में छुरी हो और काटने को तैयार हों ?[9] इन प्रश्नों के उत्तर हम में से प्रत्येक के लिए भिन्न हो सकते हैं, लेकिन सच्चाई ये है कि कारण से इतना फर्क नहीं पड़ता । यदि हम एक दूसरे से प्रेम रखने की आज्ञा का पालन करेंगे, हम एक दूसरे के साथ दया और आदर से व्यवहार करेंगे ।

अवश्य ही ऐसे समय भी होंगे जब सुधार के लिए कार्यवाही करने की जरूरत हो । याद रखें, सिद्धांत और अनुबंध में पाई गई सलाह— जैसे, जब हमें दूसरे में सुधार करने की जरूरत हो, तो बाद में हम उससे अत्याधिक प्रेम का प्रदर्शन करें ।[10]

मैं आशा करता हूं कि हम हमेशा अपने आस-पास के लोगों के विचारों और अनुभूतियों और परिस्थितियों के प्रति शिष्ट और सवंदेनशील होंगे । हम किसी का अनादर या अपमान न करें । इसकी अपेक्षा, हम दयावान और उत्साह देने वाला बनें । हमें ध्यान रखना चाहिए कि हम लापरवाही से बोले शब्दों या कामों के द्वारा दूसरे व्यक्ति के आत्मविश्वास को नष्ट न करें ।

प्रेम और क्षमा दोनों साथ-साथ चलते हैं । हमारे परिवारों में, हमारे मित्रों के साथ भी, भावनाओं को ठेस पहुंच सकती है और हम असहमत हो सकते हैं । फिर से, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि बात कितनी छोटी क्यों न हो । घाव को पकने, मवाद पड़ने, और अंततः विनाश करने के लिए नहीं छोड़ा जा सकता और नहीं छोड़ना चाहिए । आरोप लगाने से घाव खुला रहता है । केवल क्षमा करने से घाव भरता है ।

एक प्रिय महिला, जिसका अब देहांत हो चुका है मुझे एक दिन मिली थी और अनेपेक्षित ढंग से कुछ पछतावों को बताया था । उसने एक ऐसी घटना के विषय में बोला था जो बहुत साल पहले हुई थी और इसमें एक पड़ोसी किसान, जो कभी एक अच्छा मित्र था शामिल था, लेकिन जिसके साथ वह और उसके पति का कई मौकों पर मतभेद हो चुका था । एक दिन किसान ने पूछा था कि क्या अपने खेत में जाने के लिए वह उनकी जमीन से होकर रास्ता बना सकता था । मुझ से यह बात करते हुए वह थोड़ी देर के लिए रूकी और, फिर कंपकंपाती हुई आवाज में, बोली, ''भाई मॉनसन, मैंने उसे हमारी जमीन से होकर जाने

से हमेशा के लिए मना कर दिया और उसे अपने खेत तक जाने के लिए लंबे रास्ते से जाना पड़ता था । मैं गलत थी, और मुझे इस बात का पछतावा है । वह अब नहीं रहा, लेकिन हाय, काश में उसे कह पाती, 'मुझे खेद है ।' मैं सोचती हूं काश मुझे दया दिखाने का एक मौका मिला होता ।''

जब मैं उसे सुन रहा था, मेरे मन में जॉन ग्रीनलीफ वीटीयर का बहुत दुखी वक्तव्य आया : ''सबसे दुखी शब्द जो बोले या लिखे जा सकते हैं, उन्हें इन से समझा जा सकता है कि यदि हमने कुछ काम भिन्न रूप से किये होते तो शायद हमारे जीवन अधिक बेहतर होते ।''[11] भाइयों और बहनों, जब हम दूसरों के साथ प्रेम और दया से व्यवहार करते हैं, हम इस प्रकार के पछतावों से बच सकते हैं ।

प्रेम बहुत से जाने पहचाने तरीकों से व्यक्त किया जा सकता है : मुस्करा कर, हाथ हिलाकर, दया की टिप्पणी देकर, प्रशंसा कर । अन्य अभिव्यक्तियां अधिक जटिल हो सकती हैं, जैसे दूसरों की गतिविधि में रूचि दिखाना, किसी नियम को दया और धैर्य से सीखाना, बीमार या बीमारी के कारण जो बिस्तर में है उससे मिलना । ये शब्द और कार्य, और अन्य बहुत से, प्रेम को व्यक्त कर सकते हैं ।

डेल कारनीजी, एक जाने-पहचाने अमरिकन लेखक और शिक्षक है, विश्वास करता है कि प्रत्येक व्यक्ति में अपने भीतर किसी ऐसे व्यक्ति को निष्कपट प्रशंसा के कुछ शब्द बोलकर जोकि अकेला या निराश हो, संसार की खुशी की कुल संख्या को बढ़ाने की शक्ति है । वह कहता है, ''शायद आप आज अपने द्वारा बोले गए दया के शब्दों को कल भूल जाएंगे, लेकिन इन्हें प्राप्त करने वाला इन्हें जीवन-भर याद रखेगा ।''[12]

मैं आशा करता हूं कि हम अभी से, आज ही से, परमेश्वर के सभी बच्चों से प्रेम व्यक्त करेंगे, चाहे वे हमारे परिवार के सदस्य हो, हमारे मित्र हों, या फिर मात्र जान पहचान वाले हों, या बिलकुल अनजान लोग । जब हम सुबह उठते हैं, तो हम निश्चय करें चाहे कुछ भी हो जाए हम प्रेम और दया से जवाब देंगे ।

मेरे भाइयों और बहनों, प्रेम जो परमेश्वर हमारे लिए महसूस करता है यह इतना अधिक है जिसकी हम कल्पना नहीं कर सकते । इस प्रेम के कारण, उसने अपने बेटे को भेजा, जिसने हम से इतना प्रेम रखा कि उसने अपना जीवन हमारे लिए दे दिया, ताकि हमें अनंत जीवन मिले । जितना अधिक हम इस अतुलनीय उपहार को समझते हैं, हमारे हृदय हमारे अनंत पिता के प्रति, हमारे उद्धारकर्ता के प्रति, और संपूर्ण मानवजाति के प्रति प्रेम से भर जाते हैं । मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि ऐसा ही हो, यीशु मसीह के पवित्र नाम में, आमीन ।

विवरण

1. मत्ती 22:36–39 ।
2. मरकुस 12:31 ।
3. 1 यूहन्ना 4:21 ।
4. लूका 23:34 ।
5. लेखक अज्ञात, Richard L. Evans, "The Quality of Kindness," *Improvement Era,* मई 1960, 340 में ।
6. *The Teachings of Spencer W. Kimball,* संपा. Edward L. Kimball (1982), 483 ।
7. देखें ''Injured Boy Flown to Safety," *Daily Sitka Sentinel* (Alaska), अक्टू. 22, 1981 ।।
8. मोरोनी 7:47 ।
9. Gordon B. Hinckley, "Let Love Be the Lodestar of Your Life," *Ensign,* मई 1989, 67 ।
10. देखें सिद्धांत और अनुबंध 121:43 ।
11. "Maud Muller," *The Complete Poetical Works of John Greenleaf Whittier* (1878), 206 में; महत्व जोड़ गया है ।
12. Dale Carnegie, उदाहरण के लिए Larry Chang, *Wisdom for the Soul* (2006), 54 में ।

हमारे समय के लिए शिक्षाएं

अप्रैल 2014 से अक्टूबर 2014 तक, चौथे रविवार को मलकिसिदक पौरोहित्य और सहायता संस्था के पाठ अप्रैल 2014 महा सम्मेलन में दी गई एक या अधिक वार्ताओं से तैयार किये जाने चाहिए । अक्टूबर 2014 में, वार्ताएं अप्रैल 2014 या अक्टूबर 2014 महा सम्मेलन में से चुनी जा सकती हैं । अपने क्षेत्रों में वार्ता का चुनाव स्टेक और जिला अध्यक्षों को करना चाहिए, या वे इस जिम्मेदारी को धर्माध्यक्ष और शाखा अध्यक्षों को सौंप सकते हैं ।

lds.org पर वार्ताएं कई भाषाओं में उपलब्ध हैं ।

© 2014 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमति : 5/13 । अनुवाद अनुमति : 5/13 । *First Presidency Message, May 2014* का अनुवाद । Hindi । 10865 294

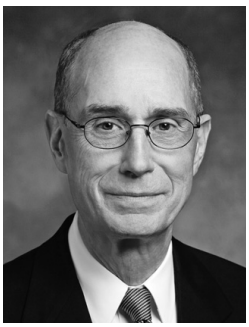

अध्यक्ष हेनरी बी. आएरिंग द्वारा
प्रथम अध्यक्षता में प्रथम सलाहकार

आशा की बेशकीमती धरोहर

जब आप चाहे परमेश्वर के साथ अनुबंध बनाने या पालन करने का चुनाव करते हो, आप चुनाव करते हैं कि आप उनके लिए आशा की धरोहर रख छोड़ते हो जो आपके उदाहरण का अनुसरण कर सकते हैं ।

मेरे प्यारे भाइयों और बहनों, आप में से कुछ को इस सभा में अंतिम-दिनों के संतों के यीशु समीह के गिरजे के प्रचारकों द्वारा निमंत्रण दिया गया होगा । हो सकता उन प्रचारकों ने आपको बपतिस्मा लेकर परमेश्वर के साथ अनुबंध बनाने का निमंत्रण पहले ही दे दिया होगा ।

आप में से अन्य इसे सुन रहे हैं क्योंकि आपने माता-पिता, पत्नी या शायद बच्चे के उस निमंत्रण को स्वीकार किया है जो आपको इस आशा में दिया गया था ताकि आप परमेश्वर के साथ पहले से बनाए अनुबंध को वापस अपने जीवन का केंद्र बना लो । आप में से कुछ जो सुन रहे हैं उद्धारकर्ता के पास बापस आने का चुनाव कर चुके हैं और आज उसके स्वागत के आनंद को महसूस कर रहे हो ।

आप कोई भी हों और आप कहीं भी हो, आपके अपने हाथों में आपकी कल्पना से अधिक लोगों की खुशी है । प्रतिदिन और प्रति घंटे आप परमेश्वर के साथ अनुबंध बनाने या पालन करने का चुनाव कर सकते हो ।

अनंत जीवन के उपहार को पाने के मार्ग में आप कहीं भी हों, आपके हाथों में बहुत से लोगों महान खुशी का मार्ग दिखाने का मौका है । जब आप चाहे परमेश्वर के साथ अनुबंध बनाने या पालन करने का चुनाव करते हो, आप चुनाव करते हैं कि आप उनके लिए आशा की धरोहर रख छोड़ते हो जो आपके उदाहरण का अनुसरण कर सकते हैं ।

आप और मैं इस प्रकार की धरोहर से आशीषित हुए हैं । अपने जीवन की खुशी के एक बड़े भाग के लिए मैं उस पुरूष का ऋणी हूं जिसे मैं इस जीवन में कभी नहीं मिला । वे एक अनाथ थे जो मेरे पड़-दादा में से एक बने थे । उन्होंने मेरे लिए आशा की एक बेशकीमती धरोहर छोड़ी है । मैं आपको उन कुछ भूमिकाओं के बारे में बताऊंगा जिन से मेरे लिए यह धरोहर बनी थी ।

उनका नाम हेनरीक आएरिंग था । वह बहुत धनवान परिवार में जन्मे थे । उनके पिता के पास कोबर्ग में जोकि अब जर्मनी में है अत्याधिक संपत्ति थी । उनकी मां विसकाउंटस शैरलेट वान ब्लॉमबर्ग थी । उसके पिता परूसीया के राजा के जमीन के रखवाले थे ।

हेनरीक, शैरलेट और एडवर्ड के प्रथम पुत्र थे । शैरलेट की मृत्यु 31 की आयु में उनके तीसरे बच्चे के जन्म के बाद हो गई थी । अपनी सारी संपत्ति और दौलत एक असफल निवेश के कारण खोने के बाद जल्द ही एडवर्ड की भी मृत्यु हो गई । वह केवल 40 के थे । वह तीन अनाथ बच्चे पीछे छोड़ गये थे ।

हेनरीक, मेरे पड़-दादा, ने अपने माता-पिता और विशाल संसारिक धरोहर दोनों को खो दिया था । उन्होंने अपनी दैनिकी में लिखा था कि उन्होंने महसूस किया कि उनकी सर्वोत्तम आशा अमरीका जाने में है । हालांकि, न तो उनका परिवार न ही कोई मित्र वहां था, उनके पास अमरीका जाने की आशा की एक अनुभूति थी । वह सर्वप्रथम न्यू यार्क सिटी गये । बाद में वे अपनी छोटी बहन के साथ सेंट लूई, मिसूरी चले गये ।

सेंट लूई में, उनका एक साथी अंतिम-दिनों का संत था । उनसे उन्होंने एल्डर पारले पी. प्रैट का लिखा एक पैमफ्लेट प्राप्त किया । उन्होंने इसे पढ़ा और फिर अंतिम-दिनों के संतों के बारे में प्रत्येक शब्द का अध्ययन किया । उन्होंने प्रार्थना की क्या वास्तव में वे स्वर्गदूत थे जो मनुष्य को प्रकट हुए थे, क्या कोई जीवित भविष्यवक्ता था, और क्या उसे सच्चा और प्रकाशित धर्म मिला था ।

दो महिने के ध्यानपूर्वक अध्ययन और प्रार्थना के बाद, हेनरीक को सपना आया जिसमें उन्हें बपतिस्मा लेने के लिए कहा गया था । एक पुरूष जिसका नाम और पौरोहित्य पवित्र स्मृति में, मैं धारण करता हूं, एल्डर विलयम ब्राऊन ने विधि को पूरा किया था । हेनरीक का बारिश के पानी के तलाब में 11 मार्च 1855 की सुबह 7:30 बजे बपतिस्मा हुआ था ।

मैं विश्वास करता हूं कि हेनरीक आएरिंग तब उसे जानते थे जो मैं आज आपको सीखा रहा हूं सच्च है । वह जानते थे कि अनंत जीवन की खुशी पारिवारिक बंधनों से मिलती है जो हमेशा कायम रहते हैं । जबकि उन्होंने हाल ही में प्रभु की सुख की योजना को प्राप्त किया था, वह जानते थे कि अनंत आनंद की उनकी आशा दूसरों को उनके उदाहरण का अनुसरण करने के स्वतंत्र चुनाव पर निर्भर करती थी । अनंत सुख की उनकी आशा उन लोगों पर निर्भर थी जिन्होंने तब जन्म भी नहीं लिया था ।

हमारे परिवार की आशा की धरोहर के एक हिस्से के रूप में, उन्होंने अपने वंशजों को लिए एक दैनिकी छोड़ी है ।

उस दैनिकी में मैं उनके लिए उनके प्रेम को महसूस कर सकता हूं जो उनका अनुसरण

करेंगे । उनके शब्दों में मैं उनकी आशा को महसूस करता हूं कि उनके वंशज हमारे स्वर्गीय घर वापस जाने के लिए उनके मार्ग पर चलने का चुनाव करेंगे । वह जानते थे कि ऐसा होने के लिए एक महान चुनाव नहीं अपितु कई छोटे चुनाव होगें । मैं उद्धरित करता हूं :

''पहली बार जब मैंने एल्डर एंडरस को बोलते सुना ... मैं हमेशा अंतिम-दिनों के संतों की सभा में शामिल हुआ हूं और ऐसे मौके असल में बहुत कम हैं, जब मैं इन सभाओं में नहीं गया, क्योंकि इन में जाना मेरी जिम्मदारी थी ।

''मैं अपनी दैनिकी में इसे लिख रहा हूं ताकि मेरे बच्चे मेरे उदाहरण की नकल करें और कभी भी संतों के साथ शामिल होने के इस महत्वपूर्ण जिम्मेदारी की अनदेखी न करें ।''[1]

हेनरीक जानते थे कि उद्धारकर्ता को सैदव याद रखने और उसकी आत्मा को अपने साथ बनाए रखने की अपनी प्रतिज्ञा को हम प्रभुभोज सभा में नवीन कर सकते थे ।

यही वह आत्मा थी जिसने उनका मिशन के लिए समर्थन किया था जिसके लिए उन्हें बपतिस्मा लेने के कुछ महिनों बाद ही बुला लिया गया था । वे अपने मिशन पर चले गये । अपने मिशन के प्रति विश्वासी रहने के उसके उदाहरण उसकी धरोहर के रूप वे छह साल के लिए उस स्थान में गये जिसे तब इंडियन प्रांत कहा जाता था । अपने मिशन से सेवामुक्त होने के बाद, वे ओकोहोमा से सॉल्ट लेक सिटी तक, लगभग 1700 किमी की पैदल यात्रा करके आये थे ।

उसके बाद उन्हें परमेश्वर के भविष्यवक्ता द्वारा तुरन्त दक्षिणी यूटाह में जाने के लिए कहा गया । वहां से उन्होंने अपने जन्म स्थान जर्मनी में मिशन सेवा करने को कहा गया । उनसके बाद उन्होंने उत्तरी मैक्सिको में अंतिम-दिनों के संतों की कालोनी के निर्माण में मदद करने के लिए प्रभु यीशु मसीह के प्रेरित द्वारा निमंत्रण दिया गया । वहां से उन्हें मैक्सिको सिटी में पूरे-समय के प्रचारक के रूप में नियुक्त किया गया । उन्होंने उन सभी बुलाहटों का सम्मान किया । उनकी कब्र कोलोनिया जुआरेज, चीहुआहुआ, मैक्सिको में एक छोटे से कब्रिस्तान में है ।

मैं ये तथ्य इसलिए नहीं बता रहा कि उनकी या जो कुछ उन्होंने किया या उनके वंशजों के लिए महानता दावा करूं । मैं इन्हें उनके विश्वास और आशा के उदाहरण का सम्मान करने के लिए बता रहा हूं जोकि उनके हृदय में प्रत्येक बुलाहट में सेवा के दौरान था ।

उन्होंने उन बुलाहटों को इसलिए स्वीकार किया था क्योंकि उन्हें विश्वास था कि पुनःजीवित मसीह और हमारे स्वर्गीय पिता जोसफ स्मिथ को न्यू यार्क राज्य के उपवन में दिखाई दिये थे । उन्होंने उन बुलाहटों को स्वीकार किया क्योंकि उन्हें विश्वास था कि पौरोहित्य कुंजियों को परिवारों को मुहरबंद करने की शक्ति के साथ प्रभु के गिरजे में पुनःस्थापित किया गया था, यदि परिवार के पास अपने अनुबंधों का पालन करने का पर्याप्त विश्वास है ।

हेनरीक आएरिंग, मेरे पूर्वज की तरह, आप भी अपने परिवार में अनंत जीवन के मार्ग में पावन अनुबंध बनाने वाले और परिश्रम और विश्वास से इनका पालन करने वाले प्रथम व्यक्ति हो सकते हो । प्रत्येक अनुबंध के साथ जिम्मेदारियां और प्रतिज्ञाएं आती हैं । हम सबों के लिए, जैसे ये हेनरीक के लिए थी, ये जिम्मेदारियां कभी सरल होती हैं लेकिन अक्सर कठिन होती हैं । लेकिन याद रखें, जिम्मेदारियां कभी-कभी कठिन हो सकती हैं क्योंकि इनका उद्देश्य हमें जीवन के मार्ग में स्वर्गीय पिता और उसके प्रिय पुत्र, यीशु मसीह के साथ हमेशा रहने के लिए आगे बढ़ते रहना है ।

आप अब्राहम की पुस्तक में से शब्दों को याद करें :

''और उनके मध्य एक व्यक्ति खड़ा था जोकि परमेश्वर के समान था, और उसने उनसे कहा जो उसके साथ थेः हम नीचे जाएंगे, क्योंकि वहां स्थान है, और हम ये वस्तुएं ले जाएंगे, और हम पृथ्वी बनाएंगे जहां वे रह सकें;

''और हम उन्हें साबित करने का मौका देंगे, कि क्या वे उन सब बातों को करेंगे जो प्रभु उनका परमेश्वर उन्हें करने की आज्ञा देता है;

''और जो अपनी प्रथम अवस्था का पालन करता है उन्हें दिया जाएगा, और जो प्रथम अपनी अवस्था का पालन नहीं करते हैं उन्हें उस राज्य में उनके समान महिमा नहीं मिलेगी जो अपनी प्रथम अवस्था का पालन करते हैं, और वे जो अपनी दूसरी अवस्था का पालन करते हैं उनके सिरों पर महिमा हमेशा हमेशा के दी जाएगी ।''[2]

हमारी दूसरी अवस्था का पालन करना परमेश्वर के साथ अनुबंधों को बनाने और हमें दी गई जिम्मेदारियों को विश्वसनीयता से पूरा करने पर निर्भर करता है । पावन अनुबंधों का जीवनभर पालन करने के लिए यीशु मसीह में विश्वास की आवश्यकता होती है ।

क्योंकि आदम और हव्वा का पतन हुआ था, हमें लालच, परिक्षाएं, और मृत्यु सर्वव्यापी धरोहर के रूप में मिले हैं । फिर भी, हमारे प्रिय स्वर्गीय पिता ने हमें अपना प्रिय पुत्र, यीशु मसीह, हमारा उद्धारकर्ता, उपहार में दिया था । यह महान उपहार और यीशु मसीह के प्रायश्चित की आशीष सर्वव्यापी धरोहर लाती हैः उन सभी के लिए पुनरूत्थान की प्रतिज्ञा और अनंत जीवन की संभावनाएं हैं जिन्होंने जन्म लिया है ।

परमेश्वर की सभी आशीषों में, अनंत जीवन महानत्तम है, हमें यह केवल तभी मिलती है जब हम यीशु मसीह के सच्चे गिरजे में उसके अधिकृत सेवकों के द्वारा दिये अनुबंधों को बनाते हैं । पतन के कारण, हम सभी को बपतिस्मे का शुद्ध करने वाले प्रभाव और हाथों को रखने से पवित्र आत्मा का उपहार पाने की आवश्यकता है । ये विधियां उनके द्वारा संपन्न की जानी चाहिए जिन्हें इन्हें करने का उचित पौरोहित्य अधिकार है । फिर, मसीह की आत्मा और पवित्र आत्मा की मदद से, हम परमेश्वर के साथ बनाये सभी अनुबंधों का पालन कर सकते हैं, विशेषकर वे जो मंदिर में दिये जाते हैं । केवल इसी तरह से, और इस मदद के साथ, कोई भी परिवार में सैदव के लिए परमेश्वर के बच्चे के रूप में असली धरोहर का अपना दावा कर सकता है ।

कुछ जो मुझे सुन रहे हैं, उन्हें शायद यह एक लगभग असंभव सपना लग सकता है ।

आपने उन विश्वासी माता-पिता के दुख को देखा होगा जो अपने उन बच्चों के कारण दुखी

हैं जिन्होंने परमेश्वर के साथ अपने अनुबंधों को अस्वीकार कर दिया है या इन्हें तोड़ने का चुनाव किया है । लेकिन ये माता-पिता अन्य अनुभवों से उत्साह और आशा प्राप्त कर सकते हैं ।

अलमा और राजा मुसायाह के बेटे परमेश्वर की आज्ञाओं और अनुबंधों के विरूद्ध घोर विद्रोह के बाद वापस आये थे । छोटे अलमा ने देखा था कि उसका बेटा कोरीयदन घोर पाप से विश्वासी सेवा को लौटा था । मॉरमन की पुस्तक यह चमत्कार भी बताती है कि लमानइयों ने धार्मिकता से नफरत करने की परंपरा का त्याग कर शांति कायम करने के लिए अनुबंध किया था ।

युवा अलमा और मुसायाह के बेटों के पास एक स्वर्गदूत भेजा गया । यह स्वर्गदूत उनके पिताओं और परमेश्वर के लोगों के विश्वास और प्रार्थना के कारण आया था । इन प्रायश्चित की शक्ति का मानव हृदयों पर कार्य करने के उदाहरणों से, आप उत्साह और दिलासा प्राप्त कर सकते हैं ।

प्रभु ने हमें सभी स्रोतों से आशा दी है जब हम उनकी मदद के लिए संघर्ष करते हैं जो अपनी अनंत धरोहर को स्वीकार करते हैं । उसने हमसे वादा किया है जब हम उसके पास लोगों को लाने का प्रयास करते हैं, बेशक वे ऐसा करने के उसके निमंत्रण को अस्वीकार कर देते हैं । उनका अस्वीकार उसे दुख पहुंचाता है, लेकिन वह हार नहीं मानता, न ही हमें हार माननी चाहिए । अपने निरंतर प्रेम के साथ वह हमारे लिए एक परिपूर्ण उदाहरण कायम करता हैः ''और फिर से, कितनी बार मैं तुम्हें एकत्रित करता जैसे कि मूर्गी अपने चुजों को अपने परों के नीचे एकत्रित करती है, हां, ओह तुम इस्राएल के घराने के पतित लोगों, हां, ओह तुम इस्राएल के घराने के लोगों, जो यरूशलेम में रहते हो, जो तुम पतित हो, हां कितनी बार मैं तुम्हें एकत्रित करता जैसे कि मुर्गी अपने चूजों को अपने परों के नीचे एकत्रित करती है, और तुम एकत्रित नहीं होते ।''[3]

आप स्वर्गीय पिता के सभी आत्मिक बच्चों को उनके घर में उसके पास लाने के लिए उद्धारकर्ता की असफल न होने वाली इच्छा पर निर्भर हो सकते हो । प्रत्येक विश्वासी माता-पिता, दादा-दादी-नाना-नानी, और पड़-दादा-दादी-नाना-नानी की यही इच्छा है । जो हम कर सकते हैं उसे करने का स्वर्गीय पिता और उद्धारकर्ता इसका परिपूर्ण उदाहरण हैं । वे कभी भी धार्मिकता के लिए दबाव नहीं डालते क्योंकि धर्मिकता को चुना जाना चाहिए । वे धार्मिकता को हमें समझाने योग्य बनाते हैं, और वे हमें स्वयं देखने देते हैं कि इसके परिणाम बेहतरीन हैं ।

प्रत्येक व्यक्ति जो इस संसार में पैदा हुआ है मसीह के प्रकाश को प्राप्त करता है, जो सही और गलत को देखने और महसूस करने में मदद करता है । परमेश्वर ने मानव सेवकों को भेजा जो, पवित्र आत्मा के द्वारा, जो हमें यह पहचानने में मदद करता है हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए । परमेश्वर सही बातों को आकर्षक बनाता है ताकि हम अपने चुनाव के प्रभाव को महसूस कर सकें । यदि हम सही का चुनाव करते हैं, तो हमें उचित समय पर खुशी मिलेगी । यदि हम बुराई का चुनाव करते हैं, इसके साथ उचित समय पर दुख और पछतावा आता है । ये प्रभाव निश्चित हैं । फिर भी किसी उद्देश्य के कारण इन्हें पूरा करने में देरी की जाती है । यदि आशीष तुरंत मिलती. तो सही का चुनाव करने से विश्वास का निमार्ण नहीं होता । और चूंकि दुख भी कभी कभी बहुत देर से मिलता, इसके लिए तुरंत क्षमा पाने के लिए विश्वास की जरूरत होती है इससे पहले कि हम इसके दुखी और पीड़ादायक प्रभाव को महसूस करें ।

पिता लेही ने अपने बेटों और उनके परिवारों के चुनावों कारण दुख महसूस किया था । वह एक महान और भला मनुष्य — परमेश्वर का भविष्यवक्ता था । वह अक्सर, उन्हें, उद्धारकर्ता यीशु मसीह की गवाही देता था । वह आज्ञाकारिता और सेवा का एक उदाहरण था जब प्रभु ने उसे, अपने परिवार को विनाश से बचाने के लिए, अपनी सभी संसारिक संपत्ति को छोड़ने का निर्देश दिया था । अपने जीवन के अंत में भी, वह अपने बच्चों के गवाही देता रहा था । उद्धारकर्ता के समान—और अपने परिवार के हृदयों को पहचानने और भविष्य के दुख और सुख दोनों को देखने की शक्ति के बावजूद—लेही ने अपने परिवार को उद्धार की ओर ले जाने के लिए अपनी बांहों को फैला कर रखा था ।

आज पिता लेही के लाखों वंशज उसकी आशा को प्रमाणित कर रहे हैं ।

आप और मैं लेही के उदाहरण से क्या सीख सकते हैं ? आप ऐसा धर्मशास्त्र का प्रार्थनापूर्वक अध्ययन और अवलोकन द्वारा कर सकते हैं ।

मैं सुझाव देता हूं कि आप छोटा और बड़ा दोनों दृष्टिकोण रखें जब आप अपने परिवार के लिए आशा की धरोहर देने का प्रयास करते हो । थोड़े समय के लिए, परेशानी होगी और शैतान तंग करेगा । और कुछ कार्यो के लिए. विश्वास में, धीरज से प्रतिक्षा करनी पड़ती है, यह जानते हुए कि प्रभु अपने समय और अपने तरीके से कार्य करता है ।

कुछ कार्य है जो आपको जल्दी करना चाहिए, जब जिनसे आप प्रेम करते हैं वे युवा हों । याद रखें कि प्रतिदिन पारिवारिक प्रार्थना, पारिवारिक धर्मशास्त्र अध्ययन, और प्रभुभोज सभा में अपनी गवाही देना बहुत आसान और बहुत प्रभावी होते हैं जब बच्चे छोटे होते हैं । छोटे बच्चे बहुधा आत्मा के प्रति हमारे एहसास से अधिक संवेदनशील होते हैं ।

जब वे बड़े हो जाते हैं, वे स्तुतिगीतों को याद रखते हैं जो उन्होंने आपके साथ गाये थे । संगीत से अधिक वे धर्मशास्त्रों और गवाही के शब्दों को याद रखेंगे । पवित्र आत्मा ये बातें उन्हें याद दिलाएगी, लेकिन धर्मशास्त्र और स्तुतिगीत के शब्द अधिक समय तक कायम रहेंगे । ये यादें उन्हें वापस खींच लायेंगी जब वे लंबे समय के लिए, संभवतः वर्षो के लिए, अनंत घर के मार्ग से भटक जाते हैं ।

हमें बड़े दृष्टिकोण की जरूरत होगी जब जिन्हें हम प्रेम करते हैं संसार के आकर्षण को महसूस करते हैं और संदेह के बादल उनके विश्वास पर छा जाते हैं । हमारा मार्गदर्शन करने और उनको शक्ति देने के लिए हमारे पास विश्वास, आशा, और उदारता है ।

परमेश्वर के दो जीवित भविष्यवक्ताओं का सलाहकार के रूप में मैंने ऐसा देखा है । वे विशेष व्यक्तित्व वाले लोग हैं । फिर भी लगता है वे निंरतर आशावाद का भाग हैं । जब कोई गिरजे

में किसी बात को लेकर चिंतित होता है, उनका अक्सर जवाब होता है ''सब ठीक हो जाएगा ।'' वे समान्यतः समस्या के बारे में अधिक जानते हैं बजाये चिंता करने वाले लोगों के ।

वे प्रभु के मार्ग को भी जानते हैं, और इसलिए वे हमेशा उसके राज्य के प्रति आशावान रहते हैं । वे जानते हैं वह मुखिया है । वह सर्वशक्तिमान है और वह देखभाल करता है । यदि आप उसे अपने परिवार, कामों का मार्गदर्शक बनाते हैं सबकुछ ठीक हो जाएगा ।

हेनरीक आएरिंग के कुछ वंशज लगता है भटक गये हैं । लेकिन उसके बहुत से पड़-नाती-पोते परमेश्वर के मंदिर में सुबह छह बजे उन पूर्वजों के लिए विधियों को करने जाते हैं जिन्हें वे कभी मिले नहीं है । वे आशा की उस धरोहर के कारण जाते हैं जो उसने छोड़ी है । उसने एक ऐसी धरोहर छोड़ी है जो उसके वंशजों द्वारा प्राप्त की जा रही है ।

वह सब करने बाद जो हम विश्वास में कर सकते हैं, प्रभु हमारे परिवारों के लिए हमारी कल्पना से अधिक महान आशीषों की आशा को पूरा करेगा । वह उसके बच्चों के रूप में, उनके लिए और हमारे लिए सर्वोत्तम चाहता है ।

हम जीवित परमेश्वर के बच्चे हैं । नासरत का मसीह उसका प्रिय पुत्र और हमारा पुनःजीवित उद्धारकर्ता है । यह उसका गिरजा है । इसमें उसके पौरोहित्य की कुंजियां है, और इसलिए परिवार अनंत हो सकते हैं । यह हमारी बेशकीमती धरोहर है । मैं प्रमाणित करता हूं कि यह सच है, यीशु मसीह के नाम में, आमीन ।

ववरण

1. देखें Henry Eyring reminiscences, 1896, typescript, Church History Library, 16–21 ।
2. अब्राहम 3:24–26 ।
3. 3 नफी 10:5 ।

© 2014 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमति : 5/13 । अनुवाद अनुमति : 5/13 । *Visiting Teaching Message, May 2014* का अनुवाद । Hindi । 10865 294